तीस हज़ार साल पुराना आटा मिला

पुरातत्त्व वेत्ताओं द्वारा खोजे गए ताज़ा प्रमाण बताते हैं कि मनुष्य ने दाने पीसकर खाने का काम खेती की शुरुआत से 20 हज़ार वर्ष पहले शुरू कर दिया था।

आम तौर पर माना जाता है कि मनुष्य अपने शुरुआती दौर में मांसाहारी था और अनाज का उपयोग काफी देरी से शुरू हुआ था। मगर *प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़* में प्रकाशित एक शोध पत्र में बताया गया है कि इटली, रूस व चेक गणतंत्र में 30 हज़ार वर्ष पुराने जो खल-बत्ते मिले हैं उन पर आटे के अवशेष पाए गए हैं। इससे पता चलता है कि मनुष्य उस समय अनाज पीसकर सेवन किया करते थे। यह खेती की शुरुआत से 20 हज़ार वर्ष पूर्व का काल है। वैसे हाल के वर्षों में निकट पूर्व क्षेत्र से ऐसे कई प्रमाण मिल चुके हैं जिनसे भोजन में वनस्पति के संकेत मिलते हैं।

उक्त शोध पत्र की एक लेखक, इटली के सिएना विश्वविद्यालय की लौरा लोंगो का कहना है कि आम तौर पर वनस्पति अवशेष इतनी लंबी अवधि तक नहीं टिके रहते जबकि मांस के अवशेष ज़्यादा टिकाऊ होते हैं। इसीलिए शायद यह मत बना था कि मनुष्य मूलतः मांसाहारी थे। वैसे भी जब कोई पत्थर का औज़ार खुदाई में मिलता है तो उसके अध्ययन से पहले उसे अच्छी तरह धो लिया जाता है। इसके चलते रहे-सहे अवशेष भी गुम हो जाते हैं।

वर्ष 2000 के आसपास लोंगो व उनके साथियों ने धुलाई से पहले ही पत्थर के औज़ारों का अध्ययन शुरू कर दिया था। खास तौर से उन्होंने इटली के बिलांचिनो नामक स्थल से प्राप्त औज़ारों का अध्ययन किया। यह स्थल करीब 28,000 वर्ष पुराना है। उन्होंने देखा कि कुछ औज़ारों पर घिसाई के जो निशान हैं, उनसे पता चलता है कि इनका उपयोग खल-बत्तों के रूप में होता होगा। इन औज़ारों पर मंड के सूक्ष्म कण भी पाए गए। इन कणों के आकार के आधार पर लोंगो व साथियों का निष्कर्ष है कि ये एक पौधे की जड़ों से निकले मंड के और ब्रेकीपोडियम नामक एक घास के बीजों के हैं। इसी प्रकार के कण उन्हें चेक गणतंत्र में दक्षिण मोराविया और मास्को के दक्षिण की ओर स्थित स्थलों से भी मिले हैं।

इस अध्ययन से पता चलता है कि दानों को पीसकर आटा बनाना मनुष्य के इतिहास में काफी जल्दी शुरू हो गया था। और यह कोई इक्का-दुक्का बस्तियों में नहीं बल्कि काफी व्यापक पैमाने पर किया जाता था। ***(स्रोत फीचर्स)***